लेबर एक्सप्रेस

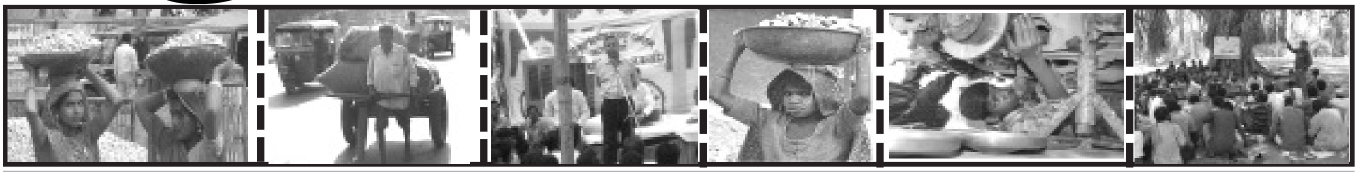

(प्रवासी श्रमिकों व युवाओं की आजीविका की बेहतरी के लिए प्रयासरत)

अंक : 8 अक्टूबर–दिसम्बर 2009 निःशुल्क एवं निजी वितरण हेतु

बात है गांव के विकास की

आपमें से काफी लोगों से दीवाली की छुट्टियों में मिलना हुआ। आपके हाल–चाल जानकर खुशी हुई। वास्तव में यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि कोई गांव से शहर में जाकर अच्छा काम करे। अपने घर परिवार की उन्नति में हाथ बटाएं। कुछ लोग तो इससे भी आगे बढ़कर अपने गांव के विकास में भी हाथ बंटाने लगे हैं।

अच्छी बात है। बात निकली है तो कहना जरुरी है कि कई प्रवासी भाई अपनी इच्छा से गांव में मंदिर बनवाने, धार्मिक कार्यक्रम करने में काफी आगेवान रहते हैं। लेकिन अपने गांवों के विकास में आ रही बाधाओं के प्रति उनका रुख थोड़ा कम ही नजर आता है। मिसाल के तौर पर अपने गांव में स्कूलों की हालत पर भी अगर ध्यान दें तो वहां की स्थितियों को बेहतर किया जा सकता है। हम सभी अपनी छुट्टियों में कम से कम इतना तो अवश्य कर सकते हैं कि अपने–अपने गांव के स्कूलों में जाकर पता करें कि वहां कितने बच्चे पढ़ते हैं। इनको पढ़ाने वाले कितने शिक्षक हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि कई गांवों में स्कूल तो हैं, मगर उनमें पढ़ाने वाले शिक्षकों की संख्या बहुत कम है। या फिर जो शिक्षक वहां लगे हुए हैं, वे पूरा समय स्कूल में नहीं देते हैं।

ऐसे में आप ही सोचिए कि आपके गांव के बच्चों यानि भावी पीढ़ी की पढ़ाई लिखाई की क्या दशा हो रही होगी। जरुरत थोड़ा सोचने और उस पर कुछ कदम उठाने की है। अभी–अभी सुनने में आया है कि उदयपुर जिले के कुराबड़ गांव के लोगों ने स्कूल में अध्यापकों की कमी से तंग आकर अपने खर्चें से दो शिक्षक स्कूल में नियुक्त कराए हैं। अगर वे भी सरकार के भरोसे बैठे रहते तो हो जाता उनके भी बच्चों का बंटाधार। अपने गांव में बच्चे क्यों नहीं छठी, सातवीं, आठवीं से आगे बढ पाते हैं ? क्या आपके गांव में स्कूलों की निगरानी के लिए कोई समिति बनी है ? क्या वह निगरानी करती भी है ? इन सभी सवालों के जवाब ढूंढना एक जिम्मेदार व्यक्ति होने के नाते हम सभी का दायित्व है। इतनी सी ही बात थी जो आपसे कहनी थी इस बार।

आपको बता दें कि दक्षिणी राजस्थान से शुरु हुआ प्रवासी श्रमिकों के हित का यह काम अब और भी इलाकों में फैल गया है। इसे बारे में ''लेबर एक्सप्रेस'' के इस अंक में आप विस्तार से पढ़ेंगे। सभी को ढेर सारी शुभकामनाएं।

इस मर्ज की दवा क्या है?

सोलह साल की मदीबेन की गुजरात में खेत पर मौत हो गई। इसके शरीर पर काटने के निशान थे।

पंद्रह साल की भूरी भी गुजरात में खेत पर काम करते हुए काल का शिकार हो गई। इसके पेट में जोर का दर्द हुआ था।

तेरह साल के रमेश को कपास के खेत में सांप ने काट लिया। वहीं उसकी जीवन लीला समाप्त हो गई।

ये तीनों बच्चे डूंगरपुर जिले के सिमलवाड़ा के रहने वाले थे। गुजरात में कपास के खेतों में मजदूरी के लिए इन्हें ले जाया गया था।

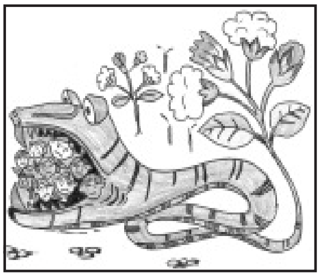

ये तो केवल कुछ उदाहरण हैं। ऐसे न जाने कितने बच्चे अब तक कपास की मजदूरी करते हुए अपनी जिन्दगी से हाथ धो बैठे हैं।

सभी जानते हैं हर साल दक्षिणी राजस्थान से हजारों बच्चे गुजरात में कपास के खेतों और कारखानों में मजदूरी के लिए ले जाए जाते हैं। इन्हें सुबह जल्दी उठकर दस से बारह घंटे

(शेष पृष्ठ 6 पर)

प्रवासी श्रमिकों के लिए सेवाओं का विस्तार

अब और भी श्रमिक केन्द्र

राजस्थान के कुछ और जिलों में श्रमिक सहायता एवं संदर्भ केन्द्रों की शुरुआत हो चुकी है। अजमेर, टोंक, जोधपुर, बाड़मेर व नागौर जिलों में भी अब श्रमिक केन्द्र शुरू हो गए हैं। इन इलाकों के प्रवासी श्रमिकों के लिए यह खुशी का समाचार है। इन केन्द्रों पर वे अपने काम धंधे से जुडी तकलीफों को बता सकते हैं।

ये केन्द्र आजीविका ब्यूरो की तकनीकि मदद से वहां की स्थानीय व प्रतिष्ठित संस्थाओं के जरिए संचालित किए जा रहे हैं। इन केन्द्रों की शुरुआत के लिए आजीविका ब्यूरो का जयपुर श्रमिक केन्द्र और अरावली संस्था मदद कर रही है।

वैसे भी एक बात अब सभी को समझ आ चुकी है कि मजदूरों का दूर शहर में जाकर काम करना हर इलाके में होता है। आपको जानकर अचरज होगा कि न केवल दक्षिणी राजस्थान से बल्कि पूरे राजस्थान से किसी न किसी काम में लोग अपनी रोजीरोटी के लिए बाहर का रास्ता पकड़ते हैं। कहीं से लोग गुजरात के तटीय इलाके में नमक की हमाली करते हैं। तो कहीं से लकड़ी और फर्नीचर के काम में अपने घरों से दूर जाते हैं। कहीं से खेती में जाकर काम करने वाले मजदूर हैं। तो कहीं रसोई का काम करने वाले रसोइये।

ऐसे में कब तक सरकार, पंचायतें और प्रशासन अपने गावों से बाहर जाने वाले श्रमिकों को नजर अन्दाज करती रहेंगी। इन श्रमिकों पर ध्यान देते हुए राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों की कुछ संस्थाओं ने यह बीडा उठाया है।

राजस्थान के अलावा उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र और बिहार में भी जल्दी ही ऐसे श्रमिक केन्द्रों की शुरुआत होने वाली है। इन राज्यों से भी भारी संख्या में श्रमिक दूर शहरों में मजदूरी करने जाते हैं। यहां की संस्थाएं भी अपने–अपने क्षेत्रों में श्रमिक केन्द्रों का संचालन करेंगी। इसमें आजीविका ब्यूरो के अनुभवों को काम में लिया जाएगा। इन संस्थाओं को सहयोग करने के लिए मुम्बई के सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट ने पहल ली है।

हुनर बड़े काम की चीज है

युवाओं के लिए तकनीकी हुनर रोजगार से जोड़ने में काफी मददगार होते हैं। रोजगार के साथ–साथ युवाओं में आत्मविश्वास भी काफी बढ़ने लगा है। ऐसा ही कुछ झलकता है रूपलाल की कहानी से।

उदयपुर जिले की सलूम्बर तहसील की पंचायत है शेषपुर। इस पंचायत के झरमाल गांव में रहता है 26 वर्षीय रूपलाल मीणा। घर की तंग हालत के चलते जैसे–तैसे बारहवीं पास की। इसके बाद ही रूपलाल की स्कूली यात्रा पूरी हो गई। रूपलाल के परिवार में माता–पिता के अलावा छह भाई व दो बहनें हैं। इसका विवाह छोटी उम्र में ही हो गया था। रूपलाल के दो बच्चे भी हैं। यही है रूपलाल का परिवार।

घर की तंग हालत को देखकर रूपलाल ने उदयपुर जाने का निर्णय लिया। उसने 3–4 साल तक सुखेर में मार्बल पालिश का काम किया। यहां रूपलाल ढ़ाई हजार रुपए महीना कमाने लगा। साथ ही जब भी वह गांव आता तो अपने भाई के साथ हाउसवायरिंग के काम में हैल्परी करता। अप्रेल महीने में रूपलाल गांव आया था। गांव में पता चला कि आजीविका ब्यूरो के सलूम्बर केन्द्र पर घरेलू बिजली उपकरण रिपेयरिंग का प्रशिक्षण शुरू हो रहा है।

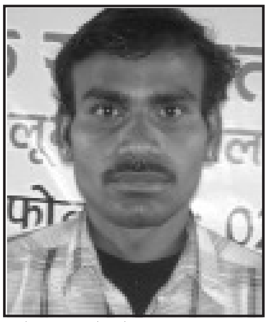

रूपलाल पहले से थोड़ा काम जानता ही था। इसलिए अपने काम को और अच्छा सीखने का विचार उसके मन में आया।

रूपलाल झट से प्रशिक्षण में जुड़ने को तैयार हो गया। एक महीने तक उसने बिजली के उपकरणों को सुधारने के सभी गुर बडी मेहनत से सीखें। प्रशिक्षण के बाद रूपलाल में आत्मविश्वास बढ़ा। उसने इसी कार्य को अपने रोजगार का साधन बनाने का निश्चय किया।

वह अपने भाई धूलाराम के साथ मिलकर पास के गांवों में छत के पंखे सुधारने का कार्य करने लगा। एक पंखे पर उसे तीन सौ रुपए तक मेहताना मिलने लगा। अब रूपलाल मिक्सर ग्राइंडर, छाछ मथानी आदि भी अच्छी तरह सुधार रहा है। साथ ही हाउसवायरिंग का काम भी अच्छा चलने लगा है। इस काम में रूपलाल को अपने भाई का काफी सहयोग मिल रहा है। इसके काम को देखकर बहुत सारे लोग रूपलाल को बुलाने लगे हैं।

रूपलाल ने बताया कि उसे प्रशिक्षण से बहुत फायदा मिला है। मेहनत व लगन से आज वह अकेला ही महीने के चार हजार रुपए कमा लेता है। आस–पास के गांवों में जाने हेतु परेशानी होती है। इसलिए अब उसने मोटरसाइकिल भी खरीद ली है। अब रूपलाल का मन टेन्ट व डेकोरेशन का काम शुरू करने का है। वह जल्दी ही अपनी दुकान खोलने जा रहा है।

अभी हाल ही में सलूम्बर केन्द्र ने मोटरवाइंडिंग प्रशिक्षण शुरू किया है। इसमें रूपलाल ने अपने गांव के चार बेरोजगार युवाओं को जोड़ा है। रूपलाल का मानना है की ये युवा भी तकनीकी हुनर का काम सीख कर सम्मान से जीवन जी सकेंगे।

उल्टी गंगा हुदी करो

आप उं एक हुदी हादी वात केणी है। अबे गांव में जदी कोई मांदो हाजो वेई जा तो वणीने पेली गांव में सिस्टर बेनजी पा लेई ने जावा। वटे भी हउ नी वे तो भडला डाक्टर साहब पा लेई न जावा। लेकिन अगर डाक्टर साब भी शेहर में लेई ने जावा री वात के वे तो आपां वणी ने शहर में भी लेई न जावा। और कदी कदी तो बीमारी री जड नी मले तो अहमदाबाद जस्या शहर में भी ईलाज रे वास्ते जानो पडे।

अहमदाबाद तो आपां सब जाणा ई स हा के ईलाज रे मामला में वटारो कई मुकाबलों नी है। लेकिन या सब बात जाण्ता थका भी कतरी दाण उल्टी गंगा वेती नजरे आवे है। नी हमज्यां। चालों मूं हमजावा री कोशिश करुं।

आप मूं भी कतरा ई भाई अहमदाबाद में काम करता वेगा। जटे राजस्थान

होस्पीटल, सिविल होस्पीटल रो नाम तो बच्चा बच्चा ने याद है। लेकिन कतरी दाण काम करता करता बिमार वेवा रे बाद कतरा ई भई अहमदाबाद वेता करता ई वटे ईलाज नी करावे और बीमारी री हालत में भी घर री बस पेली पकडे।

अबे बोलों या है के नी उल्टी गंगा। मने पतो है कि या वात भणी ने कतरा ई भई मन ही मन होची रा वेगा के 'माह तो मांदा बेवा पर अहमदाबाद में ही इलाज करावां'।

या वात भी आपरी ठीक है, लेकिन घणा भयां ने अहमदाबाद में रेता रेता तो खूब टेम वेई ग्यो लेकिन यो मालूम नी है के सस्तो ने हउ इलाज कणी जगा वेई सके। म्हारो तो यो ईज केणो है के जणा भयां ने शहर में बढिया इलाज री सुविधा रो पतो है वी जरुरत पडवा पे दूसरा अनजाण भायां री भी आपणी जानकारी उ मदद करे तो या उल्टी गंगा हुदी वेइ सके है। राम राम ।

बीमा योजना : गरीबों के लिए

आजीविका ब्यूरो गरीबों व मजदूरों की बीमा जरूरतों पर ध्यान देते हुए बिरला सनलाइफ बीमा कंपनी के साथ जुड़ी है। कंपनी की ग्रामीणों व गरीब लोगों को कम राशि में बीमा का फायदा पहुंचाने हेतु योजना है। इस योजना से 18 से 50 वर्ष की आयु के ग्रामीण जुड़ सकते हैं। योजना का नाम ''बीमा कवच योजना'' है।

योजना में सदस्य बड़ी आसानी से बन सकते हैं। यह बीमा तीन वर्ष के लिए है। इससे जुड़ने के लिए पचास, सौ या फिर दो सौ रुपए की राशि जमा करानी होती है। व्यक्ति को तीन साल में केवल एक बार ही राशि जमा करवानी होती है। इस योजना में किसी भी प्रकार के कागजात की आवश्कता नही हैं। केवल एक पन्ने का साधारण सा फार्म भरना होता है। इसमें बीमा सलाहकार द्वारा जांच की जाती है।

तीन वर्ष की अवधि के बीच में मौत हो जाने पर जमा राशि का सौ गुणा भुगतान कंपनी द्वारा दिया जाता है। मान लो किसी व्यक्ति ने दो सौ रुपए की राशि से बीमा करवाया है। उसकी मृत्यु होने की दशा में कंपनी बीस हजार की राशि का भुगतान करेगी।

योजना की खासियत

- *बीमा केवल 3 साल के लिए*
- *18 से 50 वर्ष के ग्रामीणों हेतु*
- *केवल पचास रुपए से शुरुआत*
- *एक ही बार राशि देनी है*
- *मृत्यु होने पर सौ गुना राशि*
- *तीन साल बाद राशि वापस*
- *कोई कागजी कार्यवाही नहीं*
- *सलूम्बर व अहमदाबाद केन्द्र पर*

यदि तीन वर्ष की अवधि में मृत्यु नहीं होती है तो भी कंपनी जमा राशि को ब्याज व बोनस सहित वापस करेगी।

यह बीमा योजना ग्रामीण, गरीब मजदूरो के लिए काफी उपयोगी है। काफी कम राशि से बीमा शुरू हो सकता है। ब्यूरो के सलूम्बर व अहमदाबाद केन्द्र पर इसके पंजीयन किए जा रहे हैं। **–सम्पत वैष्णव**

आजीविका ब्यूरो में सितम्बर 2009 तक

श्रमिकों के पंजीयन व परिचय पत्र

33593

- ब्यूरो द्वारा बनाए जा रहे परिचय पत्र का शुल्क अब 15 रुपए कर दिया गया है।
- श्रम विभाग को हर तीन माह में श्रमिकों के पंजीयन की नाम–पता सहित पूरी जानकारी भिजवाई जाती है।

प्रवासी श्रमिकों के लिए नई बस सेवा शुरू

बेड़ावल (सलूम्बर) से बावला(अहमदाबाद)
सुबह 9.15 बजे — **शाम 8.15 बजे**

बस नं. RJ 12 PO 1407 किराया– रु.135
पैलेसे ऑन व्हील्स ट्रावेल्स द्वारा

● मुख्य स्टेशन ●

बेडावल– सलूम्बर–आसपुर– गणेशपुर–डूंगरपुर–बिच्छीवाडा–नरोडा–पाटिया–वैष्णोदेवी–थलतेज चौकड़ी–जोधपुर चौकड़ी–सरखेज–चांगोदर–बावला

● संपर्क करें ●

श्रमिक सहायता केन्द्र	पैलेस ऑन व्हील्स ट्रावेल्स
सलूम्बर :02906–230886	मोबाइल : 9928436880
अहमदाबाद :079–65441706	मोबाइल : 9950722065

अब सलूम्बर से अहमदाबाद जाने वाले श्रमिकों को ऑटो भाड़ा नहीं चुकाना पड़ेगा। श्रमिकों की भारी मांग पर सलूम्बर से अहमदाबाद के लिए नई बस जल्दी ही शुरू होने जा रही है। अहमदाबाद में भी यह बस सरखेज, चांगोदर व बावला तक जाकर यात्रियों को छोड़गी। अभी तक श्रमिकों को बस स्टैण्ड पर उतरना पड़ता है। वहां से चांगोदर व बावला तक जाने लिए ऑटो भाड़ा चुकाना पड़ता है। यह बस सलूम्बर की बेड़ावल पंचायत से सुबह सवा नौ बजे रवाना होगी। वहीं अहमदाबाद से रात को सवा आठ बजे रवाना होकर डूंगरपुर, गणेशपुर, आसपुर व सलूम्बर के रास्ते बेड़ावल तक पहुंचेगी। बस का किराया 135 रुपए प्रति यात्री है।

श्रमिकों की इस तरह की बस सेवा की काफी मांग आ रही थी। सलूम्बर क्षेत्र के कई श्रमिक चांगोदर, बावला क्षेत्र में रहते हैं। इन्हें सलूम्बर आने–जाने में काफी किराया खर्च करना पड़ रहा था।

इस पर ध्यान देते हुए श्रमिक केन्द्र ने पैलेस ऑन व्हील्स ट्रावेल्स से संपर्क कर समस्या बताई। श्रमिकों की समस्याओं पर गौर करते हुए ट्रावेल्स कंपनी नई बस जल्दी ही शुरू करने जा रही है।

कोई यहां लाचार है

वे विलायती बबूल के पेड़ खरीदते हैं। मशीन से पेड़ों को जड़ सहित उखाड़ते हैं। फिर लकड़ियों से गट्टे काटते हैं। घास व भूसा को परत बनाते हैं। गीली मिट्टी की परत बनाकर भट्टी तैयार करते हैं। भट्टी के नीचे से आग लगाते हैं। भट्टी के बीच में खाली जगह होती है उसे भरते हैं। तब जाकर वे कोयला बना पाते हैं। ये अपने काम की शुरुआत कर्जा लेकर करते हैं।

छह लोग मिलकर दो महीने में 150 बोरी कोयला बना पाते हैं। इतने पापड़ बेलने के बाद एक मजदूर के हाथ में आते हैं महज ढाई से तीन हजार रुपए।

जी हां ! हम बात कर रहे हैं सलूम्बर में आए कोयला श्रमिकों की। पिछले तीन वर्षों में उदयपुर जिले के सलूम्बर क्षेत्र में करीब पांच सौ मजदूर कोयला बनाने के काम में जुटे हुए हैं। ये पाली, नागौर व सिरोही जिलों के रहने

वाले हैं। अनुसूचित जाति से वास्ता रखते हैं ये। रोजगार की तलाश में अपने गांव को छोड़कर इन्हें यहां आना पड़ा है।

कोयले की काम में कड़ी मेहनत तो है ही। इससे इनके स्वास्थ्य पर भी गहरा असर पड़ रहा है। गर्म भट्टी की तपन व धुएं से कई बीमारियों की चपेट में ये आ जाते हैं। ये कोयला श्रमिक चमडी के रोग, टी. बी, आंखों में जलन व पेशाब में जलन से पीड़ित हैं। कइयों को लगातार सर्दी, जुकाम व बुखार से जूझना पड़ता है। इनके बच्चे व महिलाएं भी साथ ही रहती हैं। बच्चों की पढ़ाई पर काफी बुरा असर पड़ रहा है। इनके बच्चे पढ़ नहीं पाते हैं। साथ ही महिलाओं व बच्चों को खुले में सोना पड़ता है।

कोयला श्रमिकों की तकलीफों पर ध्यान देने की जरूरत है। इन श्रमिकों की स्वास्थ्य जांच कर जरूरी इलाज की व्यवस्था होनी चाहिए। बच्चों को शिक्षा से जोड़ने में स्थानीय प्रशासन व आमजन को आगे आना चाहिए। अगर कोयले जैसे खतरनाक काम की बजाय इन्हें कोई अन्य काम मिल सके। ऐसे भी प्रयास होने चाहिए। **–दिव्या वर्मा व भगवती जोशी**

खेत मजदूरों के बच्चों की पढ़ाई

गुजरात के खेतों में काफी राजस्थानी मजदूर काम के लिए जाते हैं। इनके साथ इनके बच्चे भी होते हैं। बड़ी संख्या ऐसे बच्चों की होती है जोकि कभी स्कूल ही नहीं गए। कई बच्चों को पढ़ते हुए बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। वे अपने मां–बाप के साथ गांव छोड़कर गुजरात आ जाते हैं। ये खेतों में ही रहते हैं। वहां स्कूल दूर होने की वजह से पढ़ने नहीं जा पाते। कई बच्चे अपने छोटे भाई–बहन की देखभाल करने लग जाते हैं। बिना पढ़ाई–लिखाई के इन बच्चों की जिन्दगी बिगड़ रही है।

ऐसे बच्चों को कैसे पढ़ाई से जोड़ा जा सकता है। इस पर चिन्ता करना जरूरी है। ईडर (गुजरात) में चल रहा श्रमिक केन्द्र इस पर विचार कर रहा है। केन्द्र सांबरकाठा जिले की वडाली तहसील के गांवों में ऐसे बच्चों की जानकारी ले रहा है। बच्चों की पढ़ाई के लिए सरकार व संस्थाओं से भी बातचीत की जा रही है। **–संजय पटेल**

आजीविका ब्यूरो में सितम्बर 2009 तक

पेंशन योजना	बैंक खाते
1352	**704**
राज्य सरकार ने मजदूरों के लिए विश्वकर्मा अंशदायी पेंशन योजना शुरू की है।	श्रमिक परिचय पत्र के आधार पर श्रमिकों के जीरो बैलेंस पर बैंक खाते खुले हैं।

नौजवानों की कलम

मैं परदेसी हूं, आपके पास आया हूं

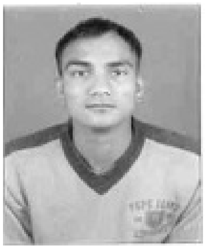

मैं पिथौरागढ़ का रहने वाला हूं। पिथौरागढ़ एक छोटा सा जिला है। यह उत्तराखंड राज्य में है। पिथौरागढ़ पहाड़ों से घिरा हुआ है। इसलिए यहां पर सर्दी बहुत पड़ती है। यह जगह घूमने–फिरने (पर्यटन) के लिए भी जानी जाती है। चीन, तिब्बत और नेपाल तीन देशों की सीमाएं यहां से जुड़ी हुई हैं। इसलिए सुरक्षा के लिए यहां फौज का जमावड़ा रहता है।

यहां के मजदूर में एक विशेषता है। मजदूर यहां पढ़ा लिखा होता है। इसलिए मजदूरों से मनमानी नहीं कर सकते। मजदूर आठ घंटे से अधिक काम नहीं करते हैं। आठ घंटे काम के बदले एक सौ तीस रुपया मजदूरी लेते हैं। हुनर वाले काम में मजदूर ढाई सौ रुपया रोज तक कमा लेता है। यहां पर अधिकतर मजदूर हुनर के कामों में हैं।

अकुशल मजदूरी के लिए यहां नेपाल व बिहार से मजदूर आते हैं। ये लोग कडिया (निर्माण) काम में ज्यादातर होते हैं।

पढ़े–लिखे युवाओं को यहां पर अन्य रोजगार भी हैं। यहां के आठवीं पास युवा फौज में नौकरी पा सकते हैं। दूसरा जंगलों में इमारती लकड़ी होती है। लकड़ी से फर्नीचर बनाने का काम काफी होता है। कई लोगों को इस काम में भी अच्छा रोजगार मिल जाता है।

यहां पर खेती भी अच्छी होती है। मुख्य रूप से धान, दाल, मक्का, गेहूं आदि पैदा होता है। इसके अलावा यहां फल भी भारी मात्रा में पैदा होते हैं। इससे अच्छी आमदनी हो जाती है।

यहां पर एक विशेष कीडा पाया जाता है। इसका नाम यारसागम्बू है। यह कीड़ा दवाई का काम करता है। इसकी मांग नेपाल व चीन देश में अधिक है। यहां के कई युवा इन कीड़ों को पकड़ने का काम करते हैं। इससे इन्हें रोजगार मिल जाता है।

यहां के मजदूर व युवाओं को अपना इलाका छोड़कर दूसरी जगह मजदूरी के लिए नहीं जाना पड़ता। इसके दो कारण हैं। एक तो यहां का मजदूर पढ़ा–लिखा है। दूसरा इस क्षेत्र में ही कई रोजगार के अवसर हैं। इसलिए पढ़ा लिखा युवा तो इन रोजगारों से जुड़ जाता है।

किन्तु यहां पर दूसरे राज्यों के लोग मजदूरी के लिए आते हैं। इन मजदूरों को निचले स्तर की मजदूरी का काम मिलता है। पढ़े लिखे नहीं होने की वजह से उनका शोषण भी होता है।

कपिल सिंह नौजवान साथी सालभर के लिए हमारे साथ जुड़े हैं। ये उत्तराखंड राज्य के पिथौरागढ़ जिले के रहने वाले हैं। वहीं की चिराग नामक संस्था के ''स्वेदश की खोज'' कार्यक्रम से जुड़े हुए हैं। ब्यूरो में रहकर ये प्रवासी श्रमिकों के लिए किए जा रहे काम को सीखना चाहते हैं। अभी ये श्रमिक केन्द्र आसपुर से जुड़े हुए हैं।

युवा साथी कपिल सिंह ने अपने इलाके के मजदूरों की स्थिति लिखी है। पाठकों के लिए हम इसे प्रकाशित कर रहे हैं। –संपादक

जिन्दगी क्या है ?

गम क्या है, ये हम समझ नहीं पाएंगे,
यदि जीवन में सिर्फ खुशी के ही मौके आएंगे।

कहते हैं जीतने के लिए कुछ हारना भी पड़ता है
ऐसे ही चढ़ने के लिए पहले गिरना भी पड़ता है
गिरना क्या है, ये हम समझ नहीं पाएंगे,
यदि जीवन में सिर्फ उठने के मौके ही आएंगे।

महफिल की आस है, तो तन्हा भी रहना पड़ेगा,
जिन्दगी के गमों को हंसकर सहना भी पड़ेगा,
तन्हाई का दर्द क्या है, ये हम नहीं समझ पाएंगे
यदि जीवन में सिर्फ महफिल के मौके ही आएंगे

आओ जिन्दगी क्या है, ये पहचान लें,
वेदों और ग्रन्थों में लिखी इन बातों को मान लें
फिर गम नाम की चीज को भूल जाएंगे,
क्योंकि फिर सिर्फ खुशी के मौके ही आएंगे।

–मदन बुनकर, मावली जिला उदयपुर

हम पढ़ेंगे, तभी बढ़ेंगे

हमारे गांवों से लड़के पांचवी–छठवीं पढ़ते ही काम के लिए गुजरात चले जाते हैं। कहते भी हैं ''पास हुए तो जिन्दाबाद, फेल हुए तो अहमदाबाद।'' पर अब वे दिन गए। अहमदाबाद में भी चाहिए दसवीं–बारहवीं पास।

कम पढ़े लिखे को काम तो मिल ही जाता है। बस मिलती है तो कम मजदूरी। मेहनत भी कम नहीं करनी पड़ती है।

अहमदाबाद जैसे बड़े शहरों में पढ़े हुए नौजवानों के लिए रोजगार के कई अच्छे अवसर हैं। बड़े–बड़े शोरूम जिन्हें मॉल कहते हैं वहां पर भारी संख्या में ऐसे लड़कों की जरूरत है। एक ही मॉल पर सैंकड़ो लड़के काम पर लग जाते हैं। यहां काम करने के लिए दसवीं–बारहवीं पढ़ा होना जरूरी है। महीने के चार से पांच हजार रुपए तक मिलते हैं। इसके अलावा बीमा, पेंशन, भविष्य निधि सभी सुविधाएं। कहीं–कहीं रहने–खाने की भी व्यवस्था है।

यहां पर कई तरह के अलग–अलग काम हैं। जैसे सामान सजाना, ग्राहक को सामान बताना, साफ–सफाई करना, कंप्यूटर से बिल बनाना। इसके अलावा लाण्ड्री का काम, बिजली मरम्मत एवं नई–नई तरह की मशीनें चलानी होती है। नए लड़के को पहले काम सिखाया जाता है। यह एक इज्जत भरा काम तो है ही। हर महीने समय पर वेतन भी मिल जाता है।

हमारा कहना है कि शहरों में काम के अवसर बहुत हैं। जरूरत है तो बस थोड़ा पढ़ने की। हम पढ़ेंगे तभी बढ़ेंगे। भविष्य भी सुरक्षित रहेगा।

पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नबाव

युवाओं के प्रति मेरी सोच है कि युवा में काफी प्रतिभा होती है। युवाओं को ईमानदार, वफादार, साहसी व मेहनती होना चाहिए। यदि सभी युवा मेहनती और शिक्षित हो जाएं तो देश की विकास दर स्वतः ही बढ़ जाएगी। युवाओं को पढ़ लिखकर अपने रुचि के क्षेत्र में काम करना चाहिए। इससे वे परिवार को सम्पन्न व शिक्षित बना सकेंगे।

हमारे देश में कई युवा बेरोजगार हैं। वे अपनी योग्यता के कारण ही रोजगार से चूक जाते हैं। युवाओं को तकनीकी कामों में रुचि रखनी चाहिए। विज्ञान व व्यापार के क्षेत्र में भी ध्यान लगाना चाहिए।

देश की सुरक्षा व सम्पत्ति को बचाने में सहयोग करना चाहिए। कानून हाथ में लेने से बचना चाहिए। **–प्रकाश कुमार तेली, आसपुर जिला डूंगरपुर**

आजीविका ब्यूरो में सितम्बर 2009 तक

व्यवसाय आधारित श्रमिक संगठन

26 संगठन 1331 सदस्य

आजीविका ब्यूरो ने चिनाई कारीगरों, हमालों, नल फिटिंग मिस्त्रियों, कारखाना श्रमिकों, इलैक्ट्रिशियन, हाथ लॉरी चलाने वाले व निर्माण काम से जुड़े श्रमिकों के समूह बनाए हैं।

बात पते की

मेरा नाम भगवान सिंह है। राजस्थान के पाली जिले की रायपुर तहसील का रहने वाला हूं। पिछले आठ साल से अहमदाबाद में होटल में काम कर रहा हूं। होटल रेस्त्रां में काम करने वाले श्रमिकों को मैं खास बातें बताना चाहता हूं।

- आप जिस होटल रेस्त्रां में काम करते हैं। उस होटल का विजिटिंग कार्ड हमेशा अपने पास रखें।
- होटल का नाम, पता व फोन नंबर अपने घरवालों को भी जरूर बता दें।
- होटल से पहनने को एक ड्रेस भी मिलती है। इस ड्रेस पर होटल का नाम लिखा होता है। आप इस ड्रेस को पहनकर एक फोटो खिंचवा कर अपने पास रख लें। इससे सबूत बनता है कि आप होटल में काम करते हैं।
- होटल के सेठ व मालिक का आदर करें। अपना व्यवहार अच्छा रखें।
- होटल में जब मेहमान (गेस्ट) आएं तो उनसे थोड़ा दूर रहकर बात करें। चेहरे पर मुस्कान रखें।
- अपनी साफ–सफाई का ध्यान रखें। सर के बाल छोटे रखने चाहिए। नाखून कटे हों। दाढ़ी बनाकर रखें। रोज दांत साफ करें व नहाएं। जूते पॉलिस किए हुए पहनें।

इन सब बातों को ध्यान रखें। इससे मेहमान (गेस्ट) खुश होंगे। आपको टिप भी अच्छी मिलेगी। आपके सेठ से भी तारीफ करके जाएंगे। इससे सेठ भी खुश रहेगा। आपकी नौकरी में तरक्की होगी। –भगवान सिंह

रोजगार सूचना

स्थान व कार्य	शुरुआती पारिश्रमिक	योग्यता
उदयपुर, भीलवाड़ा प्रतिष्ठित कंपनी में मार्केटिंग के लिए सेल्समेन	मासिक वेतन : रु. 4000 व पी.एफ. स्वयं का दुपहिया वाहन आवश्यक	10वीं
उदयपुर धागा कारखाना	वेतन : रु. 80 प्रतिदिन। तीन माह बाद 120 रुपए, एक वर्ष में 160 रुपए तक।	5वीं
बांसवाड़ा धागा कारखाना	वेतन : रु. 100 प्रतिदिन।	5वीं
उदयपुर विद्युत मीटर टेस्टिंग	मासिक वेतन : रु. 4000	10वीं
अहमदाबाद, उदयपुर, माउण्ट आबू होटल में हाउसकीपिंग	मासिक वेतन : रु. 1800–2500 आवास व भोजन व्यवस्था	8वीं
उदावड़, वापी वेटर कार्य	मासिक वेतन : रु. 2000 आवास व भोजन व्यवस्था	6वीं
उदयपुर मार्बल फिटिंग	वेतन : रु. 100–120 प्रतिदिन	अनुभवी
अहमदाबाद, उदयपुर आर.सी.सी. व ब्लॉक कार्य	मासिक वेतन : रु. 4200 प्रशिक्षण के समय भत्ता। दस घंटे कार्य। सस्ते आवास की व्यवस्था।	8वीं

रोजगार के लिए सम्पर्क करें। फोन : 9214203401, 9828949684

नौजवानों की कलम

धूम ने बनाई रोचक फिल्म

धूम युवा क्लब ने एक छोटी फिल्म बनाई है। इसका नाम है ''छोटी सी आशा''। इस फिल्म में बाल मजदूरी से जुड़े बच्चों व किशोरों की स्थितियों को कैमरे में कैद किया गया है।

इस फिल्म को बनाने के लिए धूम युवा क्लब से जुड़े युवाओं ने पिछले दिनों अहमदाबाद व सूरत शहरों का दौरा किया। वहां बाजार में काम कर रहे बच्चों व किशोरों के कैमरे से फोटो लिए। फिर कंप्यूटर की मदद से इन फोटो को फिल्म का रूप दिया। फिल्म में गाना भी शामिल किया है। इन युवाओं को श्रमिक सहायता केन्द्र गोगुन्दा ने फिल्म बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया था।

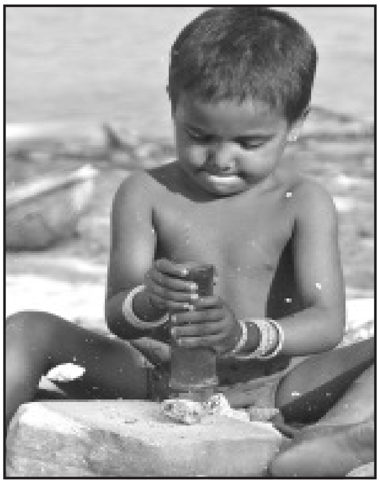

ऐसे मां–बाप जोकि अपने बच्चों को दूर शहर में मजदूरी के लिए भेजते हैं। उनके लिए फिल्म में सीख दी गई है। बच्चों को भेजने से पहले देख लें कि उनके बच्चे किस हाल में रहते हैं। वहां वे कितनी तकलीफें सहते हैं।

वास्तव में यह फिल्म काफी मार्मिक और दिल को छू लेने वाली है। महज दस मिनट की इस फिल्म में युवाओं ने अपनी कल्पना शक्ति और क्षमताओं का बेहतरीन उपयोग किया है। इससे यह साबित होता है कि युवा बेहतर संदेश देने वाले हो सकते हैं। बशर्ते कि उन्हें उचित व जरूरी मार्गदर्शन मिले।

युवा क्लब इस फिल्म को गांव–गांव में दिखाने की तैयारी कर रहा है। ताकि बच्चों को काम पर भेजने से पहले उनके मां–बाप सोचने को मजबूर हो। बच्चों को काम पर ना भेजा जाए।

युवा क्लब की 'क्रान्ति'

भारत के विकास की कुंजी युवा पीढ़ी के पास ही हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए गत दिनों उदयपुर जिले के बरवाड़ा क्षेत्र के युवाओं ने एक क्लब का गठन किया है। क्लब का नाम क्रान्ति युवा क्लब रखा गया है। इस क्लब में स्थानीय स्तर पर काम करने वाले भी हैं तो कुछ विद्यार्थी भी हैं। ये सभी युवा श्रमिक सहायता केन्द्र, बरवाड़ा से जुड़े हुए हैं।

क्लब के सदस्यों ने अपनी कार्यकारिणी भी बनाई है। इसमें निरंजन श्रीमाली अध्यक्ष, गोविन्द गवारिया उपाध्यक्ष, शंकरलाल मेघवाल को सचिव व मुकेश नागदा को कोषाध्यक्ष चुना गया है।

क्रांति युवा क्लब के सदस्यों ने स्थानीय विधालय में पौधारोपण कर अपने सामाजिक सरोकार से जुड़ी गतिविधियों का आरम्भ किया है। क्लब का शीघ्र ही कई गतिविधियां आयोजित कर क्रांति लाने का इरादा है।

आजीविका ब्यूरो में सितम्बर 2009 तक

युवाओं को प्रशिक्षण व नौकरी

2055

- अब तक कुल 68 बैच प्रशिक्षण के हुए हैं। इनमें 1003 युवाओं ने काम सीखा, फिर काम पर लगे।
- इसके अलावा ब्यूरो ने 1052 युवाओं को सीधे काम से जोड़ा है।

नाम लिखाने के देने पड़ेंगे दाम !

रोजी रोटी कमाने की फिक्र और बच्चों की परवरिश के लिए वे पूरे परिवार को लेकर देशभर में घुमक्कड जीवन जीते हैं। सड़क के किनारे और घरों के अहातों में उनके दिन और रात कटते हैं। दिनभर मौसम की मार झेलते हुए प्लास्टर ऑफ पेरिस को मोहक रुप देने वाले मोगिया जाति के लोगों की कहानी उनके काम जितनी कलात्मक नहीं है।

देशभर में शहरों की झुग्गियों और फुटपाथों पर रहकर अपनी आजीविका चलाने वाले मोगिया परिवार साल में करीब 9 माह अन्य राज्यों पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि में गुजारते हैं। इस दौरान इनके साथ होने वाले पुलिसिया आतंक के किस्से हिला देने वाले होते हैं।

उड़ती खबरों में मोगिया जाति का नाम समाज में चोरी, डकैती जैसे असामाजिक कामों से जोड़ा जाता रहा है। लेकिन इस समाज ने अपनी रोजी रोटी के लिए मूर्तिकला को ही माध्यम बना लिया है। इनका काम ऐसा है कि ये एक ही स्थान पर अपना ठिकाना लम्बे समय तक नहीं रखते।

गणपति महोत्सव से शुरू होकर इनके काम का सीजन मुख्यतया फरवरी अन्त तक चलता है। सीजन पर निर्भर काम की वजह से एक स्थान पर रहकर प्लास्टर आफ पेरिस की मूर्तिया बनाते हैं। आसपास के इलाकों में मूर्तियां बेचते हैं।

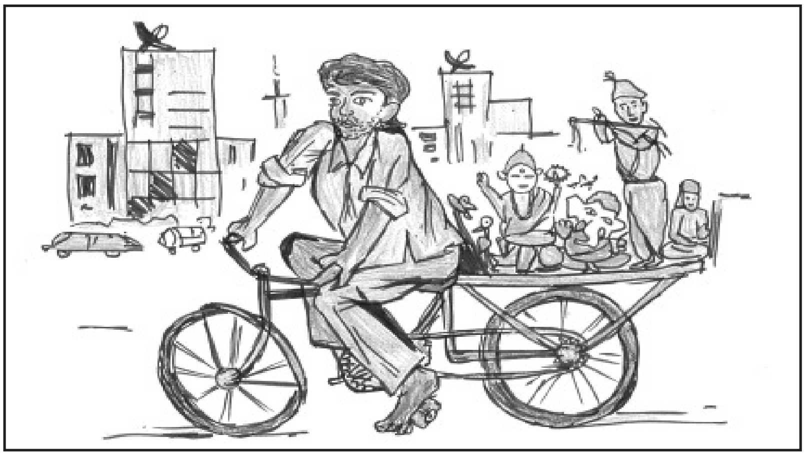

अस्थायी प्रवासी श्रमिकों की तरह काम करते ये लोग आसानी से पुलिस के निशाने भी आ जाते हैं। शहरों में जाकर काम करने में मोगिया जाति के ये लोग पुलिस के भय से त्रस्त रहते हैं। शहर में जाकर सबसे पहले अपने परिवार और साथ वाले कामगारों की संख्या, नाम, पता आदि तमाम जानकारी (मुसाफिरी) वहां के थाने में दर्ज करवाते हैं।

इसके बाद ही वे अपने काम की शुरुआत करते हैं। यही कदम कई बार उनके लिए मुसीबत का सबब बन जाता है। आमतौर पर तो थाने में बाहरी लोगों की आवाजाही की जानकारी (मुसाफिरी) निःशुल्क दर्ज होती है, लेकिन पुलिस इनसे बिना पैसे लिए नाम तक नहीं लिखती। अपना काम खत्म करने के बाद ये लोग जब दूसरे स्थान की ओर रवाना होते हैं तब बाकायदा थाने में जाकर अपना नाम व जानकारी कटवा कर भी आते हैं।

इनकी यही भलमनसाई कई बार इन्हीं को भारी पड़ जाती है। कई बार थाने में अपनी जानकारी दर्ज करवाने गए इन लोगों को शक के आधार पर पुलिस दो–दो दिन तक थाने में रखती है। बाहर उनके परिवार के लोग परेशान होते रहते हैं। पुलिस की मांग पर कभी हजार तो कभी दो हजार, पांच हजार रुपये देकर ये अपना पिण्ड छुड़ाते है।

मंहगी पड़ी 'मुसाफिरी'

मोगिया थाना के रहने वाले जगतिंग मोगिया ने आपबीती कुछ यूं बताई। वह हरियाणा के करनाल क्षेत्र के एक थाने में मुसाफिरी करवाने गया। वहां पुलिस ने उस पर चोरी का आरोप लगाकर बंद कर दिया। दो दिन बन्द रखने के बाद पुलिसवालों ने पचास किलो चावल का कट्टा देने की मांग की। जगतिंग को अपनी रिहाई के लिए आखिर चावल का कट्टा देकर जान छुड़ानी पड़ी।

❄❄❄

इटारसी (मध्य प्रदेश) में काम करने गए अमर लाल मेगिया को भी मुसाफिरी के नाम पर पांच हजार रुपयों से हाथ धोने पडे। अमर लाल का कहना है कि वह कई बार शक के आधार पर पुलिस का शिकार बना। पुलिस को मुर्गा या शराब देकर ही उसे रिहाई मिली।

आसपुर में श्रमिक केन्द्र

डूंगरपुर जिले के आसपुर में भी श्रमिक सहायता एवं संदर्भ केन्द्र की शुरुआत हो गई है। यह केन्द्र आजीविका ब्यूरो द्वारा संचालित किया जा रहा है। केन्द्र का पता है– श्रमिक सहायता एवं संदर्भ केन्द्र, सर्व शिक्षा अभियान ऑफिस के पास, आसपुर जिला डूंगरपुर। अधिक जानकारी के लिए टेलिफोन नं. 9928524129 पर संपर्क किया जा सकता है।

आसपुर से भारी संख्या में मजदूर अहमदाबाद व गुजरात में मजदूरी के लिए जाते हैं। इस केन्द्र पर प्रवासी मजदूरों के परिचय पत्र बनाए जा रहे हैं। युवाओं को हुनर के काम में प्रशिक्षण शुरू किए गए हैं। श्रमिकों को बीमा, पेंशन व अन्य सुविधाओं से भी जोड़ा जा रहा है।

इस मर्ज की दवा... (पृष्ठ 1 का शेष)

लगातार खेतों में खड़े रहकर काम करना पड़ता है। इस दौरान कई तरह के खतरे इन्हें झेलने पड़ते हैं। कपास पर छिड़की जाने वाली जहरीली दवा इनके जीवन में जहर घोलती है। खेतों में सांप के काटने के कई मामले सामने आते हैं। ये बच्चे कारखानों में भी कई तरह के हादसों के शिकार हो जाते हैं। गुजरात मजदूरी में जाने वाली लडकियों से बलात्कार व यौन शोषण जैसी घटनाएं आम हैं।

इस सबके बदले मजदूरी मिलती है 50 रुपए से भी कम। कई बार बच्चों को बिना मजदूरी दिए ही वापस भगा दिया जाता है। दुर्घटना हो जाने पर कोई मुआवजा तो दूर, इनका शव लावारिस की तरह भिजवा दिया जाता है।

बच्चों के मजदूरी पर जाने में इतनी भारी दिक्कतें हैं। फिर भी इस बार हजारों बच्चे गुजरात ले जाए गए। कुछ संस्थाओं ने सरकार के साथ मिलकर बच्चों को रोकने के प्रयास किए। बड़ी संख्या में बच्चों को रोका गया। सरकारी विभागों ने भी अपने–अपने स्तर पर इसमें मदद की।

बच्चे गुजरात में मजदूरी पर ना जाएं इसके लिए केवल सरकार व संस्थाओं के प्रयास ही काफी नहीं हैं। बच्चों के परिवार के लोगों को भी इसमें आगे आना होगा। अगर परिवारजन ये शपथ ले लें कि हम बच्चों को मजदूरी पर नहीं भेजेंगे। तभी बच्चों को रोक पाना और उनकी जिन्दगी बचा पाना संभव है। पंचायत व समुदाय के मुखियाओं को भी इसमें आगेवान रहना होगा।

आजीविका ब्यूरो में सितम्बर 2009 तक

कानूनी मदद	मुआवजा
354 विवाद दर्ज	19 लाख
138 समाधान	श्रमिक केन्द्रों ने हिसाब–किताब के लिए मजदूरों को 5424 हाजरी डायरियां दी हैं।

सोलह विजेता–तीन

दौड़ रही है गाड़ी

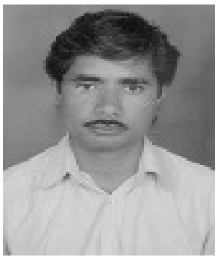

राजसमंद जिले की रेलमगरा तहसील से चार किलामीटर दूरी पर स्थित सकरावास पंचायत का मोर्रा गांव। इसी गांव के हनुमान चौक में भैरूसिंह का मकान है। भैरूसिंह के पिता चमनसिंह का तीन साल पहले निधन हो गया। चमनसिंह पास में ही खनन का काम करते थे। भैरूसिंह के बड़े भाई किशनसिंह रेलमगरा में ड्राइवरी करते हैं। भैरूसिंह की पत्नी गृहणी है तथा उनकी तीन साल की एक लड़की है। यही है भैरूसिंह का परिवार।

उचटा मन पढ़ाई से

सातवीं कक्षा पास करने के बाद ही भैरूसिंह का मन पढ़ाई से उचट गया। पढ़ाई छोड़ने के साथ ही कोई कामकाज करने की इच्छा हुई। भैरूसिंह किराए के लिए 200 रुपए उधार लेकर परिचित के साथ अहमदाबाद जा पहुंचा। अहमदाबाद में स्टील पॉलिशिंग के कारखाने में भैरूसिंह को काम मिल गया। भैरूसिंह स्टील के बर्तनों पर पॉलिश करता। इस काम के लिए उसे 800 रुपए मासिक पगार मिलती। सालभर बाद भैरूसिंह वहां कारीगर बन गया। अब उसकी पगार भी बढ़कर 1500 रुपए मासिक हो गई।

वहां उसके गले में काला कफ सा जमने लगा था। इसलिए भैरूसिंह ने तीन साल तक काम करने के बाद स्टील पॉलिश का काम छोड़ने का मन बनाया। इन तीन सालों में भैरूसिंह ने 20 हजार रुपए जमा किए। यह जमा–पूंजी उसने घर लाकर पिता को सौंप दी जिससे पिता ने घर का कर्जा चुका दिया।

अहमदाबाद से लौटने के बाद वह अपने माता–पिता के साथ पास में ही ट्रक–ट्रोले में मिट्टी भरने के काम पर जाने लगा। इससे भैरूसिंह के पूरे परिवार के पास दिनभर में 100–150 रुपए तक की आमदनी हो जाती थी।

ललक सीखने की

पांच माह बाद भैरूसिंह अपने पड़ौसी करणीदान के पास काम करने लगा। वहां भैरूसिंह ट्रैक्टर पर खलासी का काम करता। यहां भैरूसिंह को 40 रुपए दैनिक मजदूरी मिलती। ट्रैक्टर पर खलासी का काम करते–करते वह ट्रैक्टर चलाना भी सीख गया।

अब भैरू को इच्छा हुई कि ट्रक चलाना भी सीख ले। वह एक परिचित ड्राइवर बाबू खां के साथ गंगापुर सहाड़ा गया। वहां उसने ट्रक पर खलासी का काम शुरू किया। महीने के 1600 रुपए मिलने लगे। डेढ़ साल के भीतर वह खलासी का काम करते–करते ट्रक चलाना भी सीख गया। ट्रक पर माल लादकर बड़े–बड़े शहरों में जाता। दो साल तक ट्रक पर काम करने के बाद भैरूसिंह ने काम छोड़ दिया।

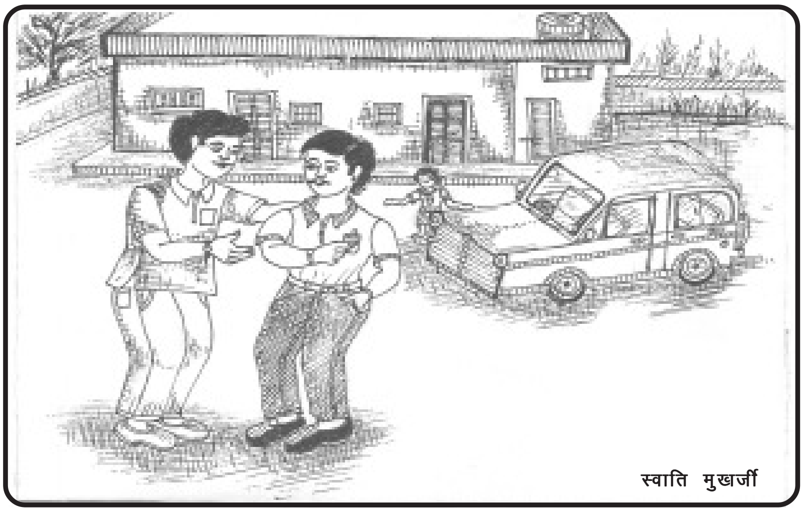

स्वाति मुखर्जी

भैरूसिंह कहता है, "मैं ट्रक को लेकर काफी दूर जाता था। इतनी दूर–दूर तक गाड़ी लेकर जाना परिवारजनों को पसंद नहीं आता। परिवार वालों ने कहा कि अगर ड्राइवरी ही करनी है तो घर पर रहकर ही करो। इसलिए मैंने ट्रक ड्राइवरी का काम छोड़ दिया।"

ट्रक ड्राइवरी का काम छोड़कर भैरूसिंह रेलमगरा आ गया। यहां वह मार्शल गाड़ी चलाने लगा। भैरूसिंह को यहां हर महीने ढाई हजार रुपए पगार मिलती। जहां से भी बुकिंग आती, भैरूसिंह गाड़ी वहीं लेकर चला जाता। राजस्थान के अलावा वह अन्य राज्यों में भी जाता। भैरूसिंह ने मार्शल गाड़ी पर चार साल तक ड्राइवर का काम किया।

मालिक तो बना पर

इसी दौरान, भैरूसिंह व बड़े भाई किशन सिंह ने मिलकर एक ट्रैक्टर खरीदा। यह ट्रैक्टर उन्होंने ढाई लाख रुपए में खरीदा था। एक लाख रुपए दोनों भाइयों के पास थे जबकि बाकी पैसा दोनों ने कर्जे के रूप में लिया। भैरूसिंह ने मार्शल गाड़ी पर ड्राइवरी का काम छोड़ दिया और वह अपने स्वयं के ट्रैक्टर पर ही ड्राइवरी का काम करने लगा। ट्रैक्टर खरीदने के चार–पांच माह के बाद ही उन्होंने उसे दो लाख रुपए में बेच दिया। भैरूसिंह कहता है "हमारी तरक्की से आस–पड़ौस के लोग जलते थे। ईर्ष्या के मारे एक दिन कुछ लोगों ने रात के समय ट्रैक्टर के इंजन में चीनी डाल दी जिससे इंजन खराब हो गया और हमें मजबूरीवश ट्रैक्टर को बेचना पड़ा।"

ट्रैक्टर बेचने के बाद भैरूसिंह रेलमगरा में ही शराब के एक गोदाम की गाड़ी पर ड्राइवरी का काम करने लगा। इस काम के बदले भैरूसिंह को हर महीने ढ़ाई हजार रुपए पगार मिलती। उसने यहां पांच साल तक काम किया। इस दौरान, गोदाम के मालिक ने अपने निजी कार्यों के लिए मारुती वैन खरीदी और भैरूसिंह को उस पर ड्राइवर रख लिया। यह काम करते पांच ही माह हुए थे कि एक दिन गाड़ी के सामने अचानक नील गाय आ जाने के कारण गाड़ी पलट गई। इस दुर्घटना में भैरूसिंह को भी चोट लगी और भैरूसिंह दो माह तक घर पर बैठा रहा। पैर में लगी चोट ठीक होने के बाद भैरूसिंह मारुती वैन की ड्राइवरी का काम करने वापस गया ही नहीं।

दो माह बाद भैरूसिंह ने अपने दोस्त लहरूलाल के साथ साझे में एक गाड़ी खरीदने का फैसला किया। दोनों दोस्तों ने निर्णय करते हुए ढाई लाख रुपए में महिन्द्रा पिकअप गाड़ी खरीद ली। भैरूसिंह व लहरूलाल दोनों ने 50–50 हजार रुपए नगद व बाकी पैसा ऋण के रूप में लिया।

धंधा बढ़ रहा है

फिलहाल भैरूसिंह स्वयं की ही यह गाड़ी चला रहा है। महीने में करीब 15 दिन गाड़ी बुकिंग पर चली जाती है। भैरूसिंह उदयपुर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा इलाकों में ही बुकिंग लेता है। महीने भर में पूरा खर्चा निकालकर भैरूसिंह के हिस्से में 4–5 हजार रुपए बच जाते हैं। गाड़ी की बुकिंग लेने के अलावा भैरूसिंह, लहरूलाल के साथ मिलकर अनाज का भी व्यापार करने लगा है। दोनों रेलमगरा के आस–पास स्थित गांवों से अनाज की बोरियां खरीदकर लाते हैं और कांकरोली, फतेहनगर की अनाज मण्डियों में बेचते हैं। इस काम के लिए भैरूसिंह स्वयं अपनी गाड़ी का ही इस्तेमाल करता है। पूरा खर्चा निकालने के बाद अनाज की एक बोरी पर उनके पास 60–70 रुपए बचते हैं।

भैरूसिंह कहता है, "गांव से बाहर जाकर गाड़ी चलाना सीखा। देशभर के इलाकों में घूमा जिससे लोगों से जान पहचान व व्यवहार बना। बाहर जाकर सीखा कि किस तरह लोग गाड़ी खरीदकर उसे व्यापार में लगाकर पैसा कमाते हैं।" भैरूसिंह ड्राइवर का काम करके अपने परिवार की जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रहा है। गांव से बाहर निकलकर ही उसने गाड़ी चलाना सीखा। व्यापार को आगे बढ़ाने की समझ आई।

निर्माण श्रमिकों के लिए सरकार शीघ्र बनाएगी कल्याण बोर्ड

राजस्थान सरकार द्वारा शीघ्र ही निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड बनाया जाएगा। श्रम एवं रोजगार राज्य मंत्री मांगीलाल गरासिया ने जयपुर में राज्य स्तरीय श्रमिक सम्मेलन में यह घोषणा की।

यह सम्मलेन आजीविका ब्यूरो द्वारा 18 सितम्बर को आयोजित किया गया था। सम्मेलन में प्रदेश भर से 400 से अधिक श्रमिक आए थे। ये श्रमिक उदयपुर, राजसमंद व जयपुर में बने निर्माण श्रमिक समूहों से जुड़े हुए हैं।

सभी को पता है कि आजीविका ब्यूरो श्रमिकों के व्यवसाय के आधार पर संगठन बनाए जाने पर जोर देती है। सोच ये है कि श्रमिकों से जुड़ी समस्याएं वे खुद हल करें। अपनी बात ताकतवर तरीके से सरकार के सामने पेश करें। इसी के तहत अभी तक अलग–अलग स्थानों पर करीब 26 संगठन बने हैं। इनमें निर्माण श्रमिक, हमाल, सुथार, हॅथ लारी चालकों के समूह बने हुए हैं।

इन्हीं समूहों में से निर्माण श्रमिक संगठनों से जुड़े श्रमिकों ने सरकार के सामने निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड के गठन की मांग रखी। यह मांग इन्होंने राजस्थान राज्य निर्माण कामगार विकास मंच के जरिए सरकार तक पहुंचाई।

जयपुर में दुर्गापुरा स्थित समग्र सेवा संघ परिसर में यह सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में मांगीलाल गरासिया, श्रम एवं रोजगार राज्य मंत्री, अंजना दीक्षित, अतिरिक्त श्रम आयुक्त, विष्णु शर्मा, विधि श्रम आयुक्त मौजूद थे।

श्रम राज्य मंत्री व श्रम अधिकारियों के सामने श्रमिकों ने अपनी समस्याएं रखीं। श्रमिकों का कहना था कि ठेकेदारों एवं मालिकों द्वारा काम करवाकर मजदूरी का भुगतान नहीं किया जाता है। मारपीट करना व काम से भगा देना आम है। बीमारी के समय कोई निःशुल्क इलाज की व्यवस्था नहीं है। चौखटियों पर छाया, पानी एवं शौचालय जैसी बेहद जरूरी सुविधाओं की कमी है। श्रमिकों ने पुरजोर समर्थन से सरकार के सामने निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड के गठन की मांग की।

श्रमिकों की इस मांग पर मंत्री जी का कहना था कि राजस्थान सरकार मजदूरों के विकास हेतु तत्पर है। श्रमिकों के लिए श्रमिक कल्याण बोर्ड के गठन की कार्रवाई चल रही है। निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड का गठन अतिशीघ्र हो जाएगा। चौखटियों पर आवश्यक सेवाओं को खड़ा कर श्रमिकों को राहत पहुंचाई जाएगी। बोर्ड के माध्यम से श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा, सस्ती दर पर स्वास्थ्य सुविधाएं, बीमा, पेंशन, श्रमिकों के बच्चों के लिए शिक्षा व सस्ते राशन की व्यवस्था की जा सकेगी।

सम्मेलन में राजस्थान राज्य निर्माण कामगार विकास मंच के प्रतिनिधियों ने श्रम राज्य मंत्री एवं अतिरिक्त श्रम आयुक्त को इन सभी मांगों का ज्ञापन भी दिया।

अब खबर है कि सरकार इस दिशा में विचार कर रही है। सरकार द्वारा अन्य राज्यों में गठित बोर्डों का भी अध्ययन किया जा रहा है। उम्मीद है कि सरकार मजदूरों की इस मांग पर शीघ्र कदम उठाएगी। **–रामप्रसाद गुर्जर**

(साभार–विविधा फीचर्स)

परिचय पत्र के शुल्क में भारी कमी

प्रवासी श्रमिक परिचय पत्र के लिए अब केवल 15 रुपए ही चुकाने होंगे।

मजदूरों की जेब पर अधिक भार ना पड़े। परिचय पत्र तैयार होने में जितना खर्चा आता है। श्रमिक उतनी ही कीमत चुकाए। अधिक से अधिक श्रमिक परिचय पत्र बनवा सकें। यही सब सोचते हुए आजीविका ब्यूरो ने परिचय पत्र के शुल्क में कमी कर दी है। पहले परिचय पत्र के लिए मजदूरों को 25 रुपए शुल्क देना पड़ता था। इस शुल्क में कटौती करते हुए अब केवल 15 रुपए शुल्क ही तय किया गया है।

सभी जानते हैं दूर शहरों में रोजगार के लिए काफी मजदूर जाते हैं। इनकी पहचान के लिए आजीविका ब्यूरो द्वारा परिचय पत्र बनाए जाते हैं। इस परिचय पत्र को राजस्थान सरकार के श्रम विभाग ने भी मान्यता दे रखी है।

श्रमिकों के लिए परिचय पत्र खूब फायदेमंद साबित हो रहा है। परिचय पत्र से कोई शहर मे पुलिस की परेशानी से बचा है। किसी ने मोबाइल सिम खरीदी है। वहीं किसी ने अपना बैंक में खाता खुलवाया है। कइयों को तो शहर में मकान व काम ढूंढने में मदद मिली है। कई बार दुर्घटना होने पर भी तुरन्त घर पर सूचना हो पाई है।

परिचय पत्र के कई फायदे देखते हुए श्रमिकों ने इसमें काफी रुचि दिखाई है। अभी तक करीब 34 हजार श्रमिक इससे जुड़े हैं।

ब्यूरो का मानना है कि परिचय पत्र के शुल्क में हुई कटौती से श्रमिकों का जुड़ाव बढ़ेगा। **–अलका श्रीमाली**

जयपुर में इन श्रमिक संगठनों ने अपनी मांग रखी

- *भोलेनाथ श्रमिक संगठन, साइफन, उदयपुर*
- *जय सोमेश्वर चिनाई मजदूर संगठन, सवीना, उदयपुर*
- *बजरंग चिनाई समूह, गोगुन्दा (उदयपुर)*
- *जरगा श्रमिक संगठन, बरवाडा (उदयपुर)*
- *चिनाई श्रमिक समूह, सलूम्बर (उदयपुर)*
- *मां चावण्डा राज मिस्त्री संघ, रेलमगरा (राजसमंद)*
- *गुरू कृपा चिनाई श्रमिक संगठन, जगतपुरा, जयपुर*
- *बाबा रामदेव चिनाई श्रमिक संगठन, सांगानेर, जयपुर*
- *विश्वकर्मा सुथारी संगठन, सांगानेर, जयपुर*

बुक पोस्ट

"आजीविका ब्यूरो" उदयपुर के लिए निदेशक द्वारा प्रकाशित एवं यूनिक प्रिन्टिंग प्रेस, उदयपुर द्वारा जनहित में मुद्रित एवं प्रसारित।
वित्तीय सहयोग : सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई
सलाहकार : राजीव खण्डेलवाल, हिम्मत सेठ, कैलाश बृजवासी, कृष्णावतार शर्मा
सम्पादन : कमलेश शर्मा, जितेन्द्र जैन

aajeevika bureau

आजीविका ब्यूरो
38, साइफन कॉलोनी, बेदला रोड, उदयपुर-313004 (राजस्थान)
फोन : 0294-2454092 बेवसाइट : www.aajeevika.org
ईमेल : info@aajeevika.org